मूल्य : एक प्रति ` 0.50 वार्षिक ` 5.00

# नेशनल बुक ट्रस्ट संवाद

वर्ष 18, अंक 5

NBT INDIA

मई 2013

अंदर के पृष्ठों में . . . . .


दामनजोड़ी (ओड़िशा) में पठन-उत्सव 2

मिंस्क अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला 3

ट्रस्ट-सभागार, दिल्ली मुख्यालय में मुद्रकों के साथ बैठक 3

विश्व पुस्तक दिवस, 23 अप्रैल के अवसर पर आयोजन

छतरपुर, मध्यप्रदेश : पुस्तकों का लोकार्पण व भाषण प्रतियोगिता 4

कलन, ओड़िशा : विचार-गोष्ठी सह पुस्तक लोकार्पण 4

अमृतसर, पंजाब : पुस्तक लोकार्पण, संगोष्ठी, कवि दरबार 5

तिरुपति, आंध्र प्रदेश : पुस्तक प्रदर्शनी सह साहित्यिक कार्यक्रम 5

पुस्तक समीक्षा 6

पंजाबी भाषा, साहित्य और सभ्याचार में योगदान के लिए ने.बु.ट्र. इंडिया का सम्मान 7

‘धृतराष्ट्र’ का लोकार्पण 7

चिट्ठीघर 8

सेवानिवृत्ति 8

आगामी पुस्तक मेले 8


## नवीनतम प्रकाशन

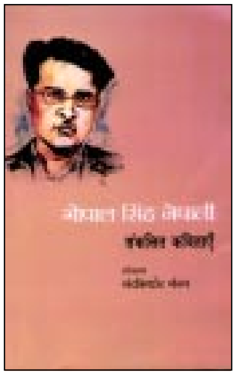

**गोपाल सिंह नेपाली : संकलित कविताएँ**

पृ. 204 ` 90

ISBN 978-81-237-6657-7

## लंदन अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला

लंदन पुस्तक मेला प्रसिद्ध अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेलों में से एक है जिसकी प्रसिद्धि का कारण उसकी केंद्रीय भौगोलिक स्थिति है, जो यूरोप, संयुक्त राज्य तथा अफ्रीका के कुछ भागों से प्रकाशकों को आकर्षित करती है। प्रकाशन उद्योग के क्षेत्र में नए आयाम खोजना तथा नवीन विचारों के प्रोन्नयन हेतु यह मेला अपने आप में एक विशेष महत्व रखता है।

15 से 17 अप्रैल, 2013 को लंदन के अर्ल्स कोर्ट में 42वाँ लंदन पुस्तक मेला आयोजित हुआ। इन तीन दिनों में लगभग 60 देशों से आए 1500 से अधिक प्रदर्शकों में आपसी बातचीत व समझौते हुए, क्षेत्रीय बिक्री क्षेत्रों की रूपरेखा तैयार की गई, प्रतिलिप्यधिकारों का क्रय-विक्रय हुआ, नए लेखन कार्यों को सराहा गया, भविष्य के प्रकाशन उद्योग को दिशा देने वाली प्रौद्योगिकी एवं नवीनीकरण का प्रदर्शन भी किया गया।

इस वर्ष मेले के ‘बाजार केंद्रित कार्यक्रम’ में तुर्की के सभी रंगों को प्रस्तुत किया गया। तुर्की की रोमांचक एवं विविध संस्कृति एवं कला व साहित्य मेले में आकर्षण का केंद्र थे। यहाँ आए 30 तुर्की प्रकाशकों ने तुर्की के वर्तमान लेखन कार्य की प्रकृति पर प्रकाश डाला। इसके अतिरिक्त मेले में लगभग 60 साहित्यिक कार्यक्रम भी आयोजित किए गए जिसमें संगोष्ठियों, संकायों व तुर्की के अग्रणी लेखकों व प्रकाशन पेशेवरों के साथ चर्चाओं के माध्यम से तुर्की के प्रकाशन उद्योग के एक विस्तृत क्षेत्र पर प्रकाश डाला गया।

मेले में आयोजित ‘इंग्लिश पेन लिटरेरी कैफे’ में श्रोताओं को विभिन्न लेखकों से रूबरू होने तथा उनके लेखन कार्य को जानने का सुअवसर प्राप्त हुआ, जिनमें विलियम बोयड, एलिफ शाफाक तथा लिज़ पिचोन जैसे प्रसिद्ध लेखक शामिल थे।

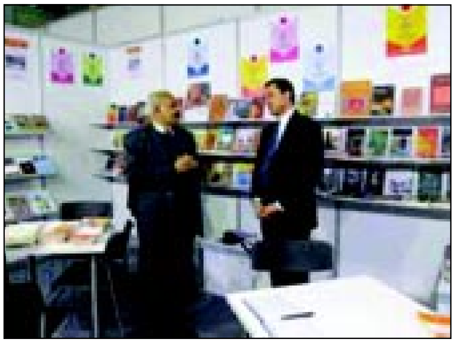

लंदन पुस्तक मेले का 'लेखक मंच' एक ऐसा समर्पित क्षेत्र था जहाँ लेखन, संपादन, डिजाइन, विपणन, ई-पुस्तकों सहित स्व-प्रकाशन के सभी पहलुओं पर मूल्यवान परामर्श साझा किए गए।

मेले में लगे 'साहित्यिक अनुवाद केंद्र' ने प्रकाशन व अनुवाद पेशेवरों के साथ-साथ विद्यार्थियों, लेखकों तथा प्रतिनिधियों को परस्पर संपर्क स्थापित करने तथा विशेषज्ञों की सलाह से लाभान्वित होने का अवसर प्रदान किया।

'बाल रचनात्मकता थियेटर' के अंतर्गत संचालित कार्यक्रमों में बाल साहित्य की दुनिया में हो रहे विकास, नए रचनात्मक दृष्टिकोण तथा नई विचारधाराओं पर प्रकाश डाला गया।

लंदन पुस्तक मेले का सबसे महत्वपूर्ण भाग था–'अंतरराष्ट्रीय प्रतिलिप्यधिकार केंद्र', जिसमें 400 से अधिक प्रकाशकों तथा प्रतिलिप्यधिकार प्रतिनिधियों ने भाग लिया। यहाँ प्रतिनिधियों तथा प्रकाशकों को रूबरू होने, नए संपर्क व समझौते स्थापित करने तथा परस्पर भाषाओं में नवीन लेखन कार्य के प्रोन्नयन का अवसर प्राप्त हुआ। लगभग 35 से अधिक प्रकाशकों तथा मुद्रकों ने भारतीय समूह का प्रतिनिधित्व किया। भारतीय मंडप में एनबीटी सहित लगभग 20 भारतीय प्रदर्शकों ने स्थान पाया।

भारतीय मंडप का उद्घाटन करते हुए यू.के. के भारतीय उच्चायुक्त, एच.ई.जे. भगवती ने भारतीय भागीदारी तथा प्रदर्शित भारतीय पुस्तकों की विस्तृत शृंखला को देखकर प्रसन्नता व्यक्त की। एनबीटी के अध्यक्ष, श्री ए. सेतुमाधवन ने उन्हें एनबीटी की विविध गतिविधियों तथा अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारतीय पुस्तकों के प्रोन्नयन हेतु एनबीटी की पहल के संबंध में भी सूचना दी।

एनबीटी ने इस मेले में संपूर्ण भारत के विविध प्रकाशकों की 300 से अधिक पुस्तकों का प्रदर्शन किया। एनबीटी का स्टॉल आगंतुकों के लिए आकर्षण का विशेष केंद्र बना रहा, जहाँ उन्होंने अँग्रेजी, हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में पुस्तकों की रोचक शृंखला का आनंद उठाया।

एनबीटी ने अपने मुख्य उद्देश्य 'अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारतीय पुस्तकों के प्रोन्नयन' की पूर्ति हेतु विदेशी प्रकाशकों को भारतीय लेखन कार्य के अनुवाद के लिए सहायता प्रदान करने की पहल की है, जिसके प्रति आगंतुकों ने विशेष रुचि दिखाई।

एनबीटी के अध्यक्ष, श्री ए. सेतुमाधवन ने विदेशी प्रकाशकों तथा प्रतिलिप्यधिकार एजेंटों के प्रतिनिधिमंडल को संबोधित करते हुए कहा कि "भारत के पास अपनी विविध भाषाओं में लेखन कार्य की बड़ी संपदा है। हमने इस योजना की शुरुआत न केवल भारतीय लेखन के प्रोन्नयन हेतु अपितु इसके प्रति अंतरराष्ट्रीय जागरूकता उत्पन्न करने तथा दुनियाभर के प्रकाशकों के साथ सुदृढ़ संबंध स्थापित करने के उद्देश्य से की है।" तत्पश्चात श्री सेतुमाधवन ने अनेक देशों के प्रतिनिधियों के साथ विचार-विमर्श भी किया, जिसमें तुर्की व जर्मनी के साथ-साथ नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला–2014 के विशिष्ट अतिथि देश पोलैंड भी शामिल था। उनके साथ, एनबीटी इंडिया के प्रतिलिप्यधिकार अधिग्रहण व अनुवाद अधिकारी, श्री बिन्नी कुरियन भी इस मेले में शामिल हुए।

# दामनजोड़ी (ओड़िशा) में पठन-उत्सव

जनजातीय क्षेत्रों में पठन-प्रवृत्ति को बढ़ावा देने हेतु एनबीटी के सतत प्रयासों के अंतर्गत ओड़िशा के दामनजोड़ी में एक पठन-उत्सव का आयोजन किया गया। यह समारोह राष्ट्रीय एल्युमीनियम कंपनी, एम. एंड आर. डिवीजन के सहयोग से 29 मार्च से 1 अप्रैल, 2013 तक दामनजोड़ी (कोरापुट, ओड़िशा) में आयोजित किया गया। इस पठन-उत्सव में अनेक कार्यक्रमों जैसे संगोष्ठी; कवयित्री सम्मिलन; प्रख्यात हिंदी कवि, श्री मंगलेश डबराल के साथ पठन-सत्र; साहित्यिक सम्मेलन तथा चार दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

समारोह का उद्घाटन 29 मार्च को नालको, एम. एंड आर. डिवीजन के कार्यकारी निदेशक, श्री बी.एन. महांती ने किया। दूरस्थ क्षेत्रों में पढ़ने की आदत को बढ़ावा देने के लिए एनबीटी के प्रयासों की सराहना करते हुए श्री महांती ने यह आशा व्यक्त की कि एनबीटी के ये प्रयास वंचित क्षेत्रों में 'पुस्तक पठन समाज' का निर्माण करने में सहायक सिद्ध होंगे।

30 मार्च को 'अमर आदिवासी संस्कृति ओ अजीरा साहित्य' विषय पर आयोजित संगोष्ठी की अध्यक्षता तेलुगू व ओड़िया भाषा के प्रख्यात विद्वान, डॉ. चागंटी तुलसी ने की। श्री प्रभाकर स्वाइन, श्री सुभाष चंद्र मिश्रा, डॉ. नारायण पांडा, श्री बिजय उपाध्याय, श्री रबी सत्पथी तथा सुश्री दीपान्विता दास ने भी इस चर्चा में भाग लिया।

31 मार्च को आयोजित 'कवयित्री सम्मिलन' की अध्यक्षता प्रख्यात कवयित्री, डॉ. प्रतिभा सत्पथी ने की। सम्मिलन में डॉ. रंजिता नायक, प्रवासिनी महाकुड, शैल बाला महापात्र, प्रमिला सत्पथी, सुजाता चौधरी, दीपान्विता दास, डॉ. प्रीति धारा सामल, माधुरी पांडा तथा राजलक्ष्मी साहू सहित राज्य की कई विख्यात कवयित्रियों ने भाग लिया। तत्पश्चात एक साहित्यिक सम्मेलन का भी आयोजन हुआ।

1 अप्रैल को आयोजित कार्यक्रम 'नवयान' में आए हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि व 'द पब्लिक एजेंडा' के कार्यकारी संपादक, श्री मंगलेश डबराल; असम साहित्य सभा के उपाध्यक्ष डॉ. परमानंद राजवंशी तथा ओड़िया भाषा के बच्चों के लेखक, डॉ. क्रुतिबास नायक तथा शैल बाला महापात्र ने बच्चों के साथ बातचीत की। इस अवसर पर 20 से अधिक बच्चों ने कविता पाठ भी किया।

महाप्रबंधक, श्री रबि नारायण त्रिपाठी; उपमहाप्रबंधक, श्री हेमंत कुमार पाल तथा श्री आर. एस. दास सहित नालको, एम. एंड आर. डिवीजन के कई वरिष्ठ पदाधिकारियों ने यहाँ उपस्थित होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। एनबीटी संपादक, श्री मानस रंजन महापात्र; नालको की कल्याण समिति के संयोजक, श्री चंडी प्रसाद राव तथा कवि व कार्यकर्ता, अमिया विक्रमानंदन भुइयां ने उत्सव का समायोजन किया।

# मिंस्क अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला

20वाँ मिंस्क अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला, बेलारूस गणराज्य के सूचना मंत्रालय द्वारा 6 से 10 फरवरी, 2013 के दौरान बेलएक्सपो प्रदर्शनी मैदान, मिंस्क में आयोजित किया गया। मेले का उद्घाटन बेलारूस गणराज्य के राष्ट्रपति प्रशासन के उपप्रमुख, अलेक्ज़ेंडर रेडकोव; बेलारूस गणराज्य की प्रथम उप सूचना मंत्री, लिलिआ अनानिच; बेलारूस गणराज्य के सार्वजनिक लेखक संघ के अध्यक्ष, निकोलाई चरगिनेटस; प्रेस व जनसंचार हेतु रूसी संघीय अभिकरण के उपप्रमुख, ब्लादिमिर कोज़लोव तथा बेलारूस गणराज्य के केंद्रीय चुनाव आयोग के अध्यक्ष, लीडिया यरमोशिन ने किया। इस अवसर पर बेलारूस गणराज्य के मान्यता प्राप्त विदेशी राजदूत भी उपस्थित थे।

मेले में आए प्रतिभागियों को शुभकामनाएँ देते हुए श्री अलेक्ज़ेंडर लुकाशेंको ने कहा, ''यह वार्षिक प्रदर्शनी वर्षभर के पुस्तक अभियान तथा बेलारूस में पुस्तकों, साहित्य तथा पठन प्रोन्नयन हेतु किए गए गहन प्रयासों के परिणामों का पुनर्विलोकन करेगी।'' इस मेले का थीम था, 'पठन के जरिए खुद को खोजें'।

20वाँ मिंस्क अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला, 25 विदेशी प्रतिभागियों सहित 120 प्रकाशकों को एक मंच पर साथ लाया, जिनमें आर्मेनिया, अज़रबैजान, वेनेजुएला, जर्मनी, भारत, इटली, कज़ाकिस्तान, चीन, क्यूबा, लिथुआनिया, माल्डोवा, पोलैंड, स्लोवाकिया, अमेरिका, फिनलैंड, ताज़िकिस्तान, तुर्की, तुर्कमेनिस्तान, यूक्रेन तथा फ्रांस शामिल थे। मेले में पहली बार फिलिस्तीन तथा सर्बिया की पुस्तकें प्रदर्शित की गईं।

इस मेले में पहली बार भारत की भागीदारी एक बड़े आकर्षण का केंद्र बनी। बेलारूस में भारतीय दूतावास के प्रथम सचिव, श्री संजय व्यास ने मेले में भारतीय भागीदारी पर अपनी खुशी व्यक्त करते हुए कहा कि इस तरह की भागीदारी देशों के परस्पर सांस्कृतिक व साहित्यिक आदान-प्रदान में सहायक सिद्ध होगी।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया इस मेले में भारत की ओर से एकमात्र प्रकाशक था। एनबीटी ने मेले में 200 से अधिक अँग्रेजी तथा हिंदी पुस्तकों का प्रदर्शन किया। यहाँ भारतीय संस्कृति, समाज, दर्शन से संबंधित पुस्तकों, बाल पुस्तकों और यहाँ तक कि कृषि से संबंधित पुस्तकों की अधिक माँग देखने को मिली। मेले में आए कई पाठकों ने हिंदी की पुस्तकों के प्रति भी अपनी गहरी रुचि दिखाई। बेलारूसी विश्वकोश की निदेशक, सुश्री तत्सिआना बिआलोवा ने भी मेले में लगे एनबीटी स्टॉल पर आकर पुस्तकों की सराहना की।

मेले में रूस विशिष्ट अतिथि देश था, जबकि ईरान कार्यक्रम का 'केंद्र' रहा। रूस से आए 200 से अधिक प्रकाशन-गृहों ने अपने नवीनतम प्रकाशनों के साथ मेले में भाग लिया। रूसी प्रस्तुति की सामूहिक विषयगत प्रदर्शनी में स्लाव साहित्य की दुनिया, बाल एवं युवा प्रकाशन, इतिहास, विज्ञान तथा संस्कृति जैसे विषय शामिल थे।

मेले में पुस्तकों के प्रस्तुतीकरण के साथ-साथ लेखकों, प्रकाशकों, कलाकारों के साथ बैठक, संगोष्ठियाँ तथा गोलमेज सत्रों जैसे कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया। यहाँ 'मिस्ट्री ऑफ बुक पेजिज' नामक एक विशेष पुस्तक प्रदर्शनी भी लगाई गई जिसमें 'आर्ट ऑफ बुक' पर आयोजित हुई राष्ट्रीय प्रतियोगिता की पुरस्कृत प्रविष्टियों का प्रदर्शन किया गया।

मिंस्क अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेले में एनबीटी की भागीदारी, बेलारूसी विश्वकोश, बेलारूस गणराज्य के विशेष आमंत्रण पर हुई। बेलारूस भारतीय प्रकाशकों को एक नए बाजार से अवगत होने का अद्वितीय अवसर प्रदान करता है।

बेलारूस के लोगों में भारतीय प्रकाशनों तथा कॉपीराइट विनिमय को लेकर अत्यंत उत्सुकता देखी गई। भविष्य में ऐसी भागीदारी को सार्थक बनाने, देशों के बीच पुस्तक-व्यापार को सुदृढ़ करते हेतु एनबीटी, बेलारूस के साथ एक करार भी करने जा रहा है, जिससे दोनों देशों में आयोजित पुस्तक मेलों तथा साहित्यिक कार्यक्रमों में एक-दूसरे की भागीदारी को प्रोत्साहन मिलेगा।

मेले में एनबीटी का प्रतिनिधित्व, एनबीटी में सहायक निदेशक (उत्पादन), श्री एस. आर. विनेश ने किया।

# ट्रस्ट-सभागार, दिल्ली मुख्यालय में मुद्रकों के साथ बैठक

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया से प्रकाशित पुस्तकों के मुद्रण की गुणवत्ता में सुधार हेतु 10 अप्रैल, 2013 को एनबीटी सभागार, नई दिल्ली में मुद्रकों (प्रिंटर्स) के साथ एक बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता एनबीटी-निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर द्वारा की गई। इस बैठक में 28 प्रिंटिंग प्रेस से आए लगभग 31 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। ट्रस्ट के संयुक्त निदेशक (उत्पादन) श्री सतीश कुमार, संयुक्त निदेशक (प्रशासन एवं वित्त) श्रीमती फरीदा एम नाईक, मुख्य संपादक एवं संयुक्त निदेशक डॉ. बलदेव सिंह 'बद्दन', प्रबंधक (विक्रय एवं विपणन) श्री सैयद हैदर एम रिज़वी के अतिरिक्त इस पारस्परिक विचार-विमर्श में लेखा, कला एवं उत्पादन विभाग के अनेक अधिकारियों ने भी भाग लिया।

बैठक का मुख्य उद्देश्य एनबीटी पुस्तकों के मुद्रण की गुणवत्ता में सुधार करना था, जिसके लिए वहाँ उपस्थित सभी मुद्रकों एवं एनबीटी अधिकारियों ने विचार-विमर्श किया तथा अपने-अपने विचार एवं सुझाव साझा किए।

# विश्व पुस्तक दिवस, 23 अप्रैल के अवसर पर आयोजन

## छतरपुर, मध्यप्रदेश : पुस्तकों का लोकार्पण व भाषण प्रतियोगिता

**मुसलमानों की संस्कृति भारतीय संस्कृति से अलग नहीं है—प्रो. अब्दुल बिस्मिल्लाह**

''हमारे इतिहास को पहले से ही विकृत ढंग से पढ़ाया जाता रहा है, मध्यकालीन इतिहास में कहा जाता है कि वह भारत पर मुसलमानों का आक्रमण था, लेकिन आधुनिक इतिहास में यह नहीं पढ़ाते कि वह ईसाईयों का आक्रमण था, उसे 'ब्रितानी दखल' पढ़ाया जाता है। अँग्रेज पहले से ही ऐसा इतिहास लिखवाते और पढ़ाते रहे हैं ताकि भारत में सांप्रदायिक विभाजन बना रहे। मुस्लिम संस्कृति भारत की संस्कृति से कतई अलग नहीं है।'' प्रख्यात लेखक व जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली में हिंदी के विभागाध्यक्ष प्रो अब्दुल बिस्मिल्लाह ने यह उद्गार छतरपुर के गाँधी आश्रम में आयोजित विश्व पुस्तक दिवस समारोह में व्यक्त किए। इस कार्यक्रम में जिले के कलेक्टर राजेश बहुगुणा विशेष तौर पर उपस्थित थे। 23 अप्रैल, विश्व पुस्तक एवं कॉपीराइट दिवस के अवसर पर नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया ने प्रगतिशील लेखक मंच, गाँधी आश्रम के सहयोग से मध्यप्रदेश के छतरपुर में इस कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसके तहत सुबह छात्रों के लिए भाषण प्रतियोगिता तथा शाम को 'पुस्तक लोकार्पण व विमर्श' का आयोजन संपन्न हुआ। इस अवसर पर जानेमाने साहित्यकार अब्दुल बिस्मिल्लाह नई दिल्ली व अशोक कुमार पांडे ग्वालियर से पधारे। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. गंगाप्रसाद बरसैया ने की। इस अवसर पर एक पुस्तक प्रदर्शनी भी लगाई गई थी।

स्थानीय गाँधी आश्रम में संपन्न भाषण प्रतियोगिता के परिणाम इस प्रकार रहे—कनिष्ठ संवर्ग—रोहित निर्मल (प्रथम), चिरायु असाटी (द्वितीय), दिव्या भारती (तृतीय), शशि मिश्र, सृजन मिश्र (सांत्वना)। वरिष्ठ संवर्ग—सुभाष श्रीवास्तव (प्रथम), अदिति सिंह (द्वितीय), वंशिका असाटी (तृतीय), नौशीन और आत्री गोस्वामी (सांत्वना)। सभी पुरस्कृत बच्चों को जिलाधीश राजेश बहुगुणा और प्रो. अब्दुल बिस्मिल्लाह के हाथों प्रमाण पत्र व नगद राशि पुरस्कारस्वरूप प्रदान की गई। इस प्रतियोगिता का परिचय ट्रस्ट में हिंदी संपादक श्री पंकज चतुर्वेदी ने दिया। कार्यक्रम का संचालन उपेन्द्र सिंह ने किया और आभार प्रदर्शन प्रो. बहादुर सिंह परमार ने किया।

इससे पूर्व नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा हाल ही में प्रकाशित पुस्तक *आजादी का आंदोलन और भारतीय मुसलमान,* जो शांतिमय रे द्वारा लिखित मूल अंग्रेजी पुस्तक, Freedom Movement and Indian Muslims का हिंदी अनुवाद है, का लोकार्पण हुआ। इसके अलावा डॉ. गंगाप्रसाद बरसैया की पुस्तक *संवाद साहित्यकारों से* (प्रकाशक साहित्य निकेतन, बिजनौर) का भी लोकार्पण किया गया। प्रो. बहादुर सिंह परमार ने डॉ. बरसैया की पुस्तक की समीक्षा करते हुए बताया कि इस पुस्तक में 83 रचनाकारों के पत्र हैं जो अपने समय के समाज, निजता आदि पर विमर्श करते हैं। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री अब्दुल बिस्मिल्लाह ने कहा ''गालिब से लेकर आधुनिक इतिहास तक के कई किस्सों के माध्यम से बताया कि आजादी के आंदोलन में कई मुस्लिम और हिंदू अँग्रेजपरस्त थे और उनसे ज्यादा लोग देशभक्त थे। ऐसे में किसी समाज-जाति को सवालों में खड़ा करना हमारी भूल होगी।'' पुस्तक के अनुवादक अशोक कुमार पांडे ने कहा कि इतिहासविदों ने हमारी संघर्षगाथाओं को कभी निष्पक्ष रूप से प्रस्तुत नहीं किया। जहाँ रानी लक्ष्मीबाई का गुणगान सभी जगह होता है, वहीं उसी काल में आजादी के लिए अपनी जान न्योछावर करने वाली बेगम हजरत महल का नाम तक लोग नहीं जानते।

जिलाधीश राजेश बहुगुणा ने नेशनल बुक ट्रस्ट के प्रकाशनों और पुस्तकों के प्रोन्नयन के प्रयासों की प्रशंसा करते हुए कहा कि आजादी का आंदोलन एक जन आंदोलन था और कोई भी जन आंदोलन किसी संप्रदाय विशेष का हो ही नहीं सकता, उसमें समाज के सभी वर्गों की समान भागीदारी होती है, तभी वह जन आंदोलन होता है। श्री बहुगुणा ने कई साहित्यिक कृतियों का उल्लेख अपने वक्तव्य में करते हुए युवाओं से अपील की कि वे अधिक से अधिक पुस्तकें पढ़ें और समाज के प्रति अपनी स्वतंत्र धारणा बनाएँ।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए श्री पंकज चतुर्वेदी ने जानकारी दी कि ने.बु.ट्र. किस तरह पूरे देश में पुस्तक प्रोन्नयन के लिए अभिनव प्रयोग कर रहा है। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे प्रो. बरसैया ने अपने उद्बोधन में कहा कि इतिहास का पूर्वागृह मानसिकता के साथ विश्लेषण करने से सामज पर विकृत असर पड़ रहा है। उन्होंने कहा कि अभी तक छतरपुर जिले के स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास पर कोई निष्पक्ष काम नहीं हुआ।

प्र.ले.स. के अध्यक्ष एन.पी. सिंह ने सभी पुस्तकप्रेमियों, बच्चों और गाँधी आश्रम के प्रति आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर गाँधी आश्रम, नेशनल बुक ट्रस्ट और गाँधी आश्रम की पुस्तकों की प्रदर्शनी लगाई गई।

## कलन, ओड़िशा : विचार-गोष्ठी सह पुस्तक लोकार्पण

''पुस्तकें मानव चेतना को व्यापक एवं मजबूत कर, उसे और अधिक मानवीय बनाती हैं। ये मनुष्य को साहस का मंत्र बताती हैं व जीवन के उतार-चढ़ाव में रचनात्मकता सिखाती हैं। अतः पुस्तकें मनुष्य की सबसे अद्भुत खोज हैं।'' ये उद्गार 23 अप्रैल, 2013 को मधुपुर हाई स्कूल, कलन, ओड़िशा के सहयोग से नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया द्वारा विद्यालय परिसर में आयोजित 'विश्व पुस्तक दिवस समारोह' में व्यक्त किए गए। वहाँ उपस्थित वक्ताओं ने ग्रामीण क्षेत्रों के प्रतिष्ठित शैक्षिक संस्थाओं में इस तरह के कार्यक्रम आयोजित करने के लिए एनबीटी की प्रशंसा की।

मनोरमा महापात्र का उद्बोधन

इस अवसर पर 'विद्यार्थियों में पठन प्रवृत्ति के प्रोन्नयन' विषय पर विचार-गोष्ठी सह पुस्तक लोकार्पण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। समारोह का उद्घाटन करते हुए प्रख्यात कथा लेखक एवं शिक्षाशास्त्री, श्री अच्युतानंद पति ने पुस्तकों के प्रति बच्चों के प्रेम पर बल देते हुए कहा, ''पुस्तकें मनुष्य में सौंदर्य बोध को बढ़ाती हैं तथा उसे सहज आनंद प्रदान करती हैं। ये मनुष्य को निखारती हैं तथा उसे विनम्र बनाती हैं। पुस्तकें अनंत प्रेरणा तथा उपदेशों का स्रोत हैं।'' एनबीटी की ओड़िया सलाहकार समिति के सदस्य प्रो. बिजय कुमार सत्पथी ने उद्घाटन-सत्र की अध्यक्षता की। इस साल ओड़िया भाषा में साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता, डॉ. गौरहरी दास तथा प्रख्यात अनुवादक, प्रो. शकुंतला वलियार सिंह ने सम्मानित अतिथि के रूप में आकर समारोह की शोभा बढ़ाई।

इस अवसर पर *लीजेंड ऑफ द फॉनिक्स एंड अदर वियतनामीज स्टोरीज, डूबा हुआ किला, पानी बरसने वाला है* तथा *नेवला भी राजा* पुस्तकों के ओड़िया अनुवाद का लोकार्पण किया गया।

उद्घाटन-सत्र के पश्चात आयोजित विचार-गोष्ठी की अध्यक्षता प्रो. बाउरी बंधु कर द्वारा की गई। समाचारपत्र 'समाज' की पूर्व संपादक, श्रीमती मनोरमा महापात्र; बच्चों के विख्यात साहित्यकार, श्री दाश बेनहूर; प्रख्यात विज्ञान लेखक व बाल साहित्यकार, प्रो. नित्यानंद स्वाइन ने यहाँ आयोजित विचार-गोष्ठी में भाग लिया।

इस अवसर पर ट्रस्ट के स्थानीय प्रतिनिधियों द्वारा एनबीटी पुस्तकों की एक प्रदर्शनी आयोजित की गई। यहाँ विद्यार्थियों एवं अध्यापकों के अलावा बड़ी संख्या में पुस्तकप्रेमी तथा साहित्यकार उपस्थित थे।

समारोह का समन्वय ट्रस्ट में ओड़िया भाषा संपादक डॉ. प्रमोद सर ने किया।

# विश्व पुस्तक दिवस, 23 अप्रैल के अवसर पर आयोजन

## अमृतसर, पंजाब : पुस्तक लोकार्पण, संगोष्ठी, कवि दरबार

पुस्तकें लोकार्पित करते हुए बाएँ से दाएँ, डॉ. बलदेव सिंह 'बद्दन', डॉ. सतनाम सिंह, श्री हरीश जैन, डॉ. विक्रम सिंह घुम्मण, डॉ. गुरनाम कौर बेदी, डॉ. केवल धालीवाल, श्री परमिन्दरजीत, श्री करनैल सिंह शेरदिल (यू.के.) और श्री हरभजन सिंह वक्ता

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया की ओर से 23 अप्रैल, 2013 को विश्व पुस्तक दिवस के अवसर पर सरूप रानी सरकारी कॉलेज (लड़कियाँ) अमृतसर में अक्खर काव कबीला और नारी चेतना मंच, अमृतसर के सहयोग से एक दिवसीय साहित्यिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के प्रारंभ में ट्रस्ट की ओर से प्रकाशित पाँच पंजाबी पुस्तकों का लोकार्पण प्रधानगी मंडल की ओर से साझा तौर पर किया गया। पुस्तकें हैं : *परी रुख* (पंजाब दीयाँ लोक कहाणियाँ), लेखिका : रुशपाल कौर सिद्दू; *बाजीगर कबीले दा सभ्याचार,* लेखक : डॉ. मोहन त्यागी; *काशीनाथ सिंह दियाँ चौणवियाँ कहानियाँ* (अनुवाद : प्रेम प्रकाश); *रवीन्द्र कालिया दियाँ चौणवियाँ कहानियाँ* (अनुवाद : डॉ. गुरचरण सिंह अरशी); *शेखर जोशी प्रतिनिधि कहानियाँ* (अनुवाद : भगवंत रसूलपुरी)। इन पुस्तकों पर आलेख श्री हरभजन सिंह वक्ता ने प्रस्तुत किया।

साहित्यिक समागम के दूसरे भाग में 'पाठकों में पठन रुचि की कमी : समस्या और समाधान' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी की अध्यक्षता डॉ. हरमहिन्दर सिंह बेदी और श्री हरीश जैन ने की। डॉ. धर्मसिंह मुख्य अतिथि और डॉ. विक्रम सिंह घुम्मण विशेष अतिथि के तौर पर शामिल हुए। संगोष्ठी में प्रो. दरया, डॉ. कुलबीर सिंह सूरी, डॉ. धर्मसिंह, डॉ. इकबाल कौर सौंद, डॉ. श्याम सुंदर दीप्ति, श्री भूपिन्दर सिंह संधू, श्री मुख्तार गिल और श्री मोहन सिंह राही ने विचार प्रकट किए।

कवि दरबार की अध्यक्षता डॉ. संतोख सिंह शहरयार ने की। मुख्य अतिथि श्री परमिन्दरजीत और विशेष अतिथि श्री अजायब सिंह हुंदल थे। कवि थे–निर्मल अर्पण, अजायब सिंह हुंदल, परमिन्दरजीत, संतोख सिंह शहरयार, गुरचरन सिंह चरन, पाल सिंह वल्ला, दर्शन कौर, विपिन प्रीत, केवल धालीवाल, जगतार गिल, विशाल, सिमरत गगन, कंवलजीत कोरपाल, प्रो. सतनाम सिंह, सुखबीर अमृतसरी, कमल, भूपिन्दर प्रीत, हरी सिंह गरीब, शाहवाज सिंह लोलानंगल, भगवान सिंह दीपक, जसवीर सिंह जमीर, हरभजन सिंह खेमकरनी, डॉ. विक्रम जीत, करनैल सिंह शेरदिल, हरबंस सिंह नागी, अरतिन्दर संधू, तेजिन्दर बावा, कल्याण अमृतसरी, त्रिलोक सिंह दीवाना, सीमा संधू और जुगराज कौर।

कार्यक्रम के आरंभ में ट्रस्ट के मुख्य संपादक एवं संयुक्त निदेशक डॉ. बलदेव सिंह 'बद्दन' ने ट्रस्ट के प्रकाशन कार्यक्रम, साहित्यिक गतिविधियाँ, ट्रस्ट की ओर से आयोजित किए जाने वाले पुस्तक मेलों, पुस्तक परिक्रमा आदि की जानकारी दी। कॉलेज की ओर से प्रिंसिपल डॉ. गुरनाम कौर बेदी ने स्वागत के शब्द कहे। डॉ. बेदी ने कहा कि अमृतसर की पावन धरती पर गुरु अर्जुन देव जी ने गुरु ग्रंथ साहेब का संपादन किया। उन्होंने कहा कि 'पोथी परमेश्वर का थान' है। हमारे जीवन में पठन-रुचि की कमी है और आज की संगोष्ठी में हम इस बात का मंथन करने के लिए एकत्रित हुए हैं।

इस साहित्यिक कार्यक्रम में अमृतसर के लेखकों, बुद्धिजीवियों, मीडिया से जुड़े व्यक्तियों के अलावा पाँच सौ के करीब विद्यार्थी भी शामिल थे। इस अवसर पर लोकगीत प्रकाशन, चंडीगढ़ की ओर से विशाल पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। विद्यार्थियों ने लगभग चालीस हजार रुपये की पुस्तकें खरीदीं।

## तिरुपति, आंध्र प्रदेश : पुस्तक प्रदर्शनी सह साहित्यिक कार्यक्रम

'विश्व पुस्तक दिवस' के उपलक्ष्य में नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया द्वारा 21 से 23 अप्रैल, 2013 तक आंध्र प्रदेश के तिरुपति में तीन दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी तथा अन्य साहित्यिक गतिविधियों का आयोजन किया गया।

21 अप्रैल को चेलप्पा मेस्त्री आंबेडकर भवन, तिरुपति में इस तीन दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए प्रसिद्ध लेखक व अनुवादक, श्री एस. मुनिसुंदरम ने कहा कि एनबीटी पुस्तक प्रदर्शनी विद्यार्थियों, सामान्य पाठकों तथा साहित्यकारों के लिए अत्यंत उपयोगी है। पुस्तकों को पढ़ने से उन्हें राष्ट्र के इतिहास सहित कई अन्य बातों का ज्ञान होता है। मंदिरों के शहर तिरुपति में

इस पुस्तक समारोह का आयोजन करने के लिए श्री एस. मुनिसुंदरम ने ट्रस्ट की भूरि-भूरि सराहना की।

इस समारोह के विशिष्ट अतिथि, कवि तथा अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, श्री उमा महेश्वरा शर्मा ने हमारे जीवन में पुस्तकों की महत्ता के संबंध में बताते हुए कहा कि पुस्तकें हमारी सच्ची मित्र तथा मार्गदर्शक हैं। एक अच्छी पुस्तक जीवन के हर क्षेत्र में हमारा साथ देती है।

एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए हर व्यक्ति को अपनी पठन-प्रवृत्ति का विकास अवश्य करना चाहिए। उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी कि वे अच्छी पुस्तकें पढ़ने की आज से ही आदत डालें।

इस समारोह के उद्घाटन-सत्र में प्रख्यात कथाकार, प्रो. एम. नरेंद्र; प्रसिद्ध पत्रकार व कथाकार, श्री उमा महेश्वरा शर्मा तथा श्री जी.आर. महर्षि; विख्यात कथाकार, श्री एस. देवेंद्र चारी तथा क्षेत्रीय प्रबंधक, बंगलुरु, श्री अमित कर्की ने भाग लिया।

तीन दिन तक चले इस पुस्तक उत्सव का सफल समापन श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय के कला खंड सभागार में हुआ। इस समापन समारोह में श्रोताओं को संबोधित करते हुए कुलपति, डब्ल्यू. राजेंद्र ने कहा कि हमें दैनिक जीवन की आदतों में पुस्तक-पठन को भी शामिल करना चाहिए। प्राचीन काल में रामायण, महाभारत और पैडा बाल शिक्षा जैसे ग्रंथ समाज में नैतिक मूल्यों के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे, परंतु आज के 'डिजिटल युग' ने पुस्तक-पठन संस्कृति को धूमिल कर दिया है।

मुख्याधीक्षक, एम.के. सुकुमार ने इस संबंध में टिप्पणी की कि नैतिक मूल्यों के ह्रास के इस युग में केवल पुस्तकें ही मनुष्य के लिए मानवता की राह प्रशस्त कर सकती हैं।

कार्यक्रम के समापन समारोह में श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय कला ब्लॉक के प्रधानाचार्य, प्रो. किरणक्रांत चौधरी तथा आकाशवाणी कडप्पा के निदेशक शामिल हुए। समारोह का संचालन ट्रस्ट में तेलुगु भाषा संपादक श्री मोहन पथिपका ने किया।

# पुस्तक समीक्षा

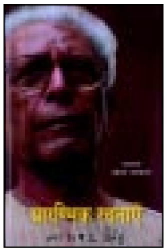

**प्रारंभिक रचनाएँ : नामवर सिंह**
*संपा. : भारत यायावर*
पृ. 248 ₹ 450
***राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.,*** 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-02
कद्दावर आलोचक नामवर सिंह की प्रारंभिक रचनाएँ पहली बार पाठकों के सामने है। इसमें कविताएँ हैं, फुटकर गद्य रचनाएँ एवं निबंध भी। अपने समय की किंवदंती बन चुके रचनाकार का प्रारंभ जानना सबका कुतुहल होता है। संकलनकर्ता के सौजन्य से प्रस्तुत है नामवर का प्रारंभ।

**मृदुला गर्ग : मेरी कथा-यात्रा** (कहानी संग्रह)
पृ. 208 ₹ 300
***इंद्रप्रस्थ प्रकाशन,*** के-71, कृष्णा नगर, दिल्ली-51
आज के समय-समाज की त्रासदी और विडंबना को व्यंग्य की चाशनी में घोलकर, साधारण को असाधारण ढंग से कथा रूप में उकेरा गया है यहाँ।

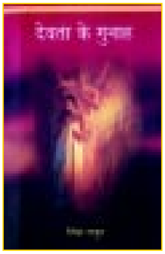


**देवता के गुनाह** (उपन्यास)
*देवेश ठाकुर;* पृ. 320 ₹ 495
***सामयिक बुक्स,*** 3320-21, जटवाड़ा, दरियागंज, एन. एस. मार्ग, नई दिल्ली-02
एक बुद्धिजीवी की अस्वस्थ मानसिकता का चित्रण है इस उपन्यास में। गंभीर और भद्र दिखने वाले ऐसे लोग भी भीतर से क्रूर एवं उच्छृंखल होते हैं।

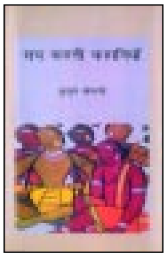

**सच कहती कहानियाँ** (कहानी संग्रह)
*कुसुम खेमानी;* पृ. 120 ₹ 200
***राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि.,*** 7/31, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-02
घर-परिवार के भीतर के यथार्थ को उकेरता 14 कहानियों का यह संग्रह पाठकों को रुचेगा। कथाकार ने किस्सागो शैली में कहानियाँ लिखी है जो पाठकों को बाँधता है।

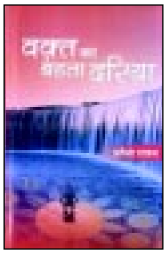


**वक़्त का बहता दरिया** (कविता संग्रह)
*प्रवेश धवन;* पृ. 96 ₹ 175
***कलावती प्रकाशन,*** पी-4, पिलंजी, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली-23
ज़िदगी एक लंबी पेचीदा सड़क है और इस सड़क पर कहीं गड्ढे हैं तो कहीं गुबार; सड़क कहीं समतल भी है। कवयित्री ने अपने जीवनानुभव को सीधे-सीधे अभिधा में रख दिया है, कहीं-कहीं लक्षणा और व्यंजना भी है। रुचेगा।

**कुछ कह देते...** (कविता संग्रह)
*वंदना 'पुष्पेंद्र' यादव;* पृ. 80 ₹ 150
***कलावती प्रकाशन,*** पी-4, पिलंजी, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली-23
सामाजिक सरोकारों और मानवीय मूल्यों को उकेरती कविताएँ अकसर अपने पाठकों को अपने निकट खींच लाती हैं। कवयित्री वंदना की कविताएँ भी काव्य-भावकों को ऐसे ही आमंत्रित करती हैं।

**पाकिस्तानी स्त्री : यातना और संघर्ष** (स्त्री-विमर्श)
*ज़ाहिदा हिना;* पृ. 228 ₹ 295
***वाणी प्रकाशन,*** 4695, 21-ए, दरियागंज, नई दिल्ली-02
पाकिस्तान की आम स्त्रियों की यातनाओं और संघर्षों की पृष्ठभूमि में कथाकार-टिप्पणीकार ज़ाहिदा की यह कृति बेहद मार्मिक और हैरतअंगेज है। इसे पढ़ना स्त्री की यातनाओं की अंधेरी सुरंग से होकर गुजरना है।

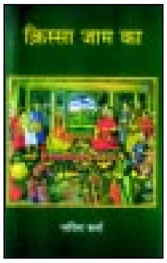


**क़िस्सा जाम का**
*नासिरा शर्मा;* पृ. 144 ₹ 225
***लोकभारती प्रकाशन,*** दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद-211001
खुरासान की लोककथाओं का फारसी से हिंदी में अनुवाद है यह—अनुवाद क्या, मौलिक रचनाएँ ही हैं, क्योंकि ये लोककथाएँ खुरासान की बोली में है।

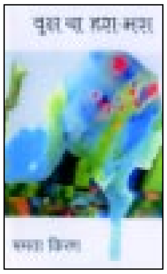


**वृक्ष था हरा-भरा** (कविता संग्रह)
*ममता किरण;* पृ. 96 ₹ 150
***किताबघर प्रकाशन,*** 4855-56/24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-02
कंक्रीट के जंगल में भी कोमल भावनाओं की ऊष्णता बची हुई है, वृक्ष अब भी हरा-भरा है, टेक्नोलॉजी के बीच भाषा बची हुई है, रिश्ते बचे हुए हैं, और...और भी बहुत कुछ। इस संग्रह को पढ़कर यही भावबोध उपजता है।

**चरखा क्या बोले**
*डॉ. मीरा झा;* पृ. 344 ₹ 595
***शिवालिक प्रकाशन,*** 27/16, शक्तिनगर, नई दिल्ली-07
आजादी से पहले, गाँधी जी के आह्वान पर देश-समाज-व्यक्ति का मन-मिजाज बदलना, फिर स्वाधीनता की लड़ाई में स्वयं को झोंक देना; देश का आजाद होना और फिर इसके आगे की भी कथा। इसी ताने-बाने पर आधारित पुस्तक।

**उपहार** (कहानी संग्रह)
*चाँद 'दीपिका';* पृ. 168 ₹ 250
***नीरज बुक सेंटर,*** सी-32, आर्यानगर सोसायटी, पटपड़गंज, दिल्ली-92
प्रस्तुत कथा-संग्रह में 18 कहानियाँ सम्मिलित हैं। सभी कहानी अलग-अलग विषय और समस्या को निरूपित करती है। कहानियों की बुनावट समाज की तल्ख सच्चाइयों के रेशों से हुई है इसलिए पात्र व घटनाएँ हमें अपने आस-पास की ही लगती हैं।

**तुम भारत के वीर हो** (काव्य संग्रह)
*राकेश चक्र;* पृ. 128 ₹ 250
***साहित्य चेतना प्रकाशन,*** 30/35, विश्वास नगर, शाहदरा, दिल्ली-32
देशभक्ति के गीतों का चलन इन दिनों कुछ कम हो चला है, पर ऐसा नहीं कि ऐसे गीत लिखे नहीं जा रहे। प्रस्तुत संग्रह में देशभक्ति के गीतों के साथ जोश और प्रेरणा जगाने वाले भी गीत हैं।

# पंजाबी भाषा, साहित्य और सभ्याचार में उल्लेखनीय योगदान के लिए ने.बु.ट्र. इंडिया का सम्मान

डॉ. बलदेव सिंह 'बद्दन' सम्मान ग्रहण करते हुए, बाएँ से दाएँ : डॉ. जसपाल सिंह, कुलपति; श्री तरलोचन सिंह, भूतपूर्व सांसद; श्री सुखबीर सिंह रखड़ा, ग्रामीण विकास और पंचायत मंत्री, पंजाब; डॉ. सी.आर. मौद्गिल, भूतपूर्व निदेशक, पंजाबी अकादमी, हरियाणा; श्री सतनाम माणक, कार्यकारी संपादक, दैनिक अजीत, जालंधर तथा प्रो. गुरनायब सिंह

ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित पुस्तक का लोकार्पण करते हुए, बाएँ से दाएँ : डॉ. बलदेव सिंह 'बद्दन', डॉ. मोहन त्यागी, डॉ. जसपाल सिंह, डॉ. सी.आर. मौद्गिल, श्री तरलोचन सिंह, श्रीमती बलबीर कौर और श्री सतनाम माणक

पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला के श्री गुरु तेगबहादुर हॉल में 30 अप्रैल और पहली मई, 2013 को यूनीवर्सिटी के स्थापना दिवस पर छठी अखिल भारतीय पंजाबी काँफ्रेंस का आयोजन किया गया। इस काँफ्रेंस में देश और विदेश के लगभग 700 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस अवसर पर पंजाबी भाषा, साहित्य और सभ्याचार में उल्लेखनीय योगदान के लिए 12 पंजाबी शख्सियतों का सम्मान किया गया। सम्मानित शख्सियत हैं : प्रसिद्ध साहित्यकार और पत्रकार श्री गुरबचन सिंह भुल्लड़, गायिका स्व. श्रीमती सुरिंदर कौर, संत जोध सिंह (ऋषिकेश), सरदार पंछी, (स्व.) जसपाल सिंह भट्टी, श्रीमती सुरिंदर नीर, एस.पी. सिंह ओबराय (दुबई), हरिंदरपाल सिंह (दिल्ली), जसवीर सिंह सभरवाल (वाराणसी), डॉ. बलदेव सिंह 'बद्दन' (नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया में मुख्य संपादक एवं संयुक्त निदेशक), डॉ. संतोख सिंह (भोपाल), फिल्म कलाकार श्री मेहर मित्तल (मुंबई)। सम्मानित शख्सियतों को 31 हजार रुपये नकद (प्रत्येक), प्रशस्ति पत्र और स्मृति चिह्न प्रदान किए गए। उल्लेखनीय है कि नेशनल बुक ट्रस्ट से पंजाबी भाषा में 700 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हैं। पंजाब में 15 पुस्तक मेले, 200 से अधिक पुस्तक प्रदर्शनियाँ, 45 कवि दरबार, 14 कहानी दरबार, 65 लेखकों से रूबरू कार्यक्रम, 10 क्षेत्रीय स्तर की बाल साहित्य संगोष्ठियाँ और 40 से अधिक 'पाठकों में पठन-रुचि की कमी : समस्या और समाधान' विषय पर संगोष्ठियाँ आयोजित की गईं। विदित हो कि ट्रस्ट में पंजाबी भाषा का कार्य डॉ. बलदेव सिंह 'बद्दन' देखते हैं। ट्रस्ट की ओर से यह सम्मान श्री बद्दन ने प्राप्त किया। इस अवसर पर ट्रस्ट की ओर से प्रकाशित पंजाबी की मूल पुस्तक *बाजीगर कबीले दा सभ्याचार* का लोकार्पण भी किया गया। पुस्तक के लेखक हैं डॉ. मोहन त्यागी।

# 'धृतराष्ट्र' (नेत्रहीन लेखक की आत्मकथा) का लोकार्पण

पुस्तक लोकार्पित करते हुए, बाएँ से दाएँ : श्री राजकुमार कौशिक, श्री मित्रसेन मीत, डॉ. एस. तरसेम, श्री विकास नारायण राय, डॉ. जोगिंदर टाइगर, श्री हरीश ढाड़ा, श्री ओमप्रकाश गसो और श्री मनजीत धणगस

24 मार्च, 2013 को लोक साहित्य मंच, लुधियाना और पंजाब वेलफेयर एसोसिएशन फॉर द ब्लाइंड की ओर से मालवा क्षेत्र की प्रमुख साहित्य सभाओं के सहयोग से बरनाला में एक साहित्यिक समारोह का आयोजन किया गया। इस साहित्यिक समारोह में ट्रस्ट की ओर से प्रकाशित डॉ. एस. तरसेम की आत्मकथा पुस्तक 'धृतराष्ट्र' का लोकार्पण किया गया। इस साहित्यिक समारोह में 500 से अधिक लेखकों एवं पुस्तकप्रेमियों ने भाग लिया।

# नेशनल बुक ट्रस्ट की नवीनतम पुस्तकें

**आजादी का आंदोलन और भारतीय मुसलमान**
*शांतिमय रे; अनु. : अशोक कुमार पाण्डेय*
पृ. 164 ₹ 80
आजादी के आंदोलन में भारतीय मुसलमानों की भूमिका और उनके योगदान के निरपेक्ष विवरण के क्रम में भारतीय मुसलमानों के प्रति अनेक पूर्वाग्रहों का निराकरण इस पुस्तक के जरिए करने की कोशिश की गई है। ISBN 978-81-237-6732-1

**मौत के चंगुल में**
*प्रेम स्वरूप श्रीवास्तव; चित्र : पार्थ सेनगुप्ता*
पृ. 80 ₹ 85
17 अध्यायों में बँटी कहानी। ISBN 978-81-237-6579-2

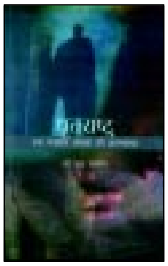

**धृतराष्ट्र** (एक नेत्रहीन लेखक की आत्मकथा)
*डॉ. एस. तरसेम; अनु. : सुभाष नीरव* पृ. 340 ₹ 145
इस रचना में आत्मकथा का आस्वाद है तो उपन्यास का भी। रचनाकार ने बेबाकी से अपने जीवन के परतों को उधेड़ा है। किसी नेत्रअक्षम लेखक की संभवतः यह पहली आत्मकथा पुस्तक है।
ISBN 978-81-237-6669-0

**कागज और पर्यावरण**
*वीरेन्द्र कुमार भारती;* पृ. 180 ₹ 140
इस पुस्तक में कागज के इतिहास और विकास की गाथा तो प्रस्तुत की ही गई है, आधुनिक उपभोक्ता आंदोलन की सबसे बड़ी देन पैकेजिंग प्रौद्योगिकी और पर्यावरण हितैषी पैकेजिंग पर भी जानकारी है। ISBN 978-81-237-6705-5

R.N.I. No. 64445/96
Postal Regd. No. DL (SW) 1/4077/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 23/2012-14
Mailing date 15/16 same month
Date of publication 08/05/2013

## चिट्ठीघर

देश-विदेश की पुस्तकीय एवं साहित्यिक गतिविधियों को 'गागर में सागर' की तरह परोसता है आपका यह **संवाद**।

**बहादुर मिश्र,** भागलपुर, बिहार

साहित्यिक-सांस्कृतिक एवं पुस्तक संबंधी गतिविधियों की जानकारी के लिए **ने.बु.ट्र. संवाद** का एक अहम स्थान है। अद्यतन प्रकाशन के बाबत भी यह पत्र समयोपयोगी है। ट्रस्ट की पुस्तक 'औषधीय पौधे' की मार्च अंक में प्रकाशित समीक्षा उपयोगी लगी।

**विनय अश्म,** जमुई, झारखंड

**संवाद** के माध्यम से देश में पुस्तक-संस्कृति के साथ-साथ राष्ट्रभाषा हिंदी का भी विकास और उत्थान हो रहा है। पुस्तक-चर्चा के माध्यम से पाठकों में मानवीयता का भी संदेश पहुँच रहा है।

मानवता के दो आधार / सादा जीवन उच्च विचार।

**देवराज आर्यमित्र,** हरीनगर, नई दिल्ली

**नेशनल बुक ट्रस्ट किताब क्लब का सदस्य बनें एवं पुस्तकों पर 20 प्रतिशत की छूट पाएँ।**

## सेवानिवृत्ति

**श्रीमती उषा कौल** तीस से अधिक वर्षों तक ट्रस्ट में सेवारत रहने के उपरांत, 31 मार्च, 2013 को सेवानिवृत्त हो गईं। श्रीमती कौल सन् 1982 में ट्रस्ट में कनिष्ठ पुस्तकालय सहायक के रूप में नियुक्त हुई थीं। सन् 2000 में प्रोन्नत होकर वह पुस्तकालय सहायक बनीं और इसी पद से सेवानिवृत्त हुईं। ट्रस्ट के सभी सहकर्मी उनके अच्छे स्वास्थ्य एवं दीर्घायु होने की कामना करते हैं।

### आगामी पुस्तक मेले

| | | |
|---|---|---|
| **धर्मशाला पुस्तक मेला,** हिमाचल प्रदेश | – | मई, 2013 |
| **मुंबई पुस्तक मेला,** महाराष्ट्र | – | मई-जून, 2013 |
| **श्रीनगर पुस्तक मेला,** जम्मू-कश्मीर | – | जून, 2013 |
| **कन्याकुमारी पुस्तक मेला,** तमिलनाडु | – | जुलाई, 2013 |
| **बिलासपुर पुस्तक मेला,** छत्तीसगढ़ | – | सितंबर, 2013 |
| **चेन्नई पुस्तक मेला,** तमिलनाडु | – | सितंबर, 2013 |
| **भोपाल/इंदौर पुस्तक मेला,** मध्य प्रदेश | – | अक्तूबर, 2013 |
| **इलाहाबाद पुस्तक मेला,** उत्तर प्रदेश | – | अक्तूबर, 2013 |
| **बाल पुस्तक मेला,** कोचीन/तिरुवनंतपुरम | – | अक्तूबर-नवंबर, 2013 |

**नेशनल बुक ट्रस्ट *संवाद*** भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन संचालित स्वायत्त संगठन, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया का मुख पत्र है।

इस पत्रिका के आलेखों में व्यक्त विचारों से ट्रस्ट की सहमति का होना आवश्यक नहीं है।

संपादक : **बलदेव सिंह 'बद्दन'**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
उत्पादन सहयोग : **नरेन्द्र कुमार**

**नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया**
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः nbtindia@nbtindia.org.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **नेशनल बुक ट्रस्ट *संवाद*** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया की ओर से सतीश कुमार द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, फेज-I, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित और नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 से प्रकाशित। संपादक बलदेव सिंह 'बद्दन'।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

**भारत सरकार के सेवार्थ**

***डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :***
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070